महर्षिवाल्मीकिसंस्कृतविश्वविद्यालयः

मौनधारा (मून्दडी), कपिष्ठल (कैथल), हरियाणा

(हरियाणा सरकार के अधिनियम २०/२०१८ द्वारा संस्थापित एवं यू.जी.सी. की धारा २(एफ) के अन्तर्गत मान्यता प्राप्त)

महर्षि-प्रभा

मासिक ई-पत्रिका

वंदे मातरम्

अंक-१५

संयुक्ताङ्क

जुलाई-अगस्त २०२३

विक्रमी संवत् २०७९-८०

वाल्मीकये नमस्तस्मै कवये रामसाक्षिणे ।
रामायणं लिखित्वा यः प्रथितो धरणीतले ।।

संरक्षक

श्री बंडारु दत्तात्रेय
(महामहिम राज्यपाल)

श्री मनोहरलाल खट्टर
(मुख्यमंत्री हरियाणा)

श्री मूलचन्द शर्मा
(माननीय उच्च शिक्षा मंत्री)

मार्गदर्शक

प्रो. रमेश चन्द्र भारद्वाज
(कुलपति)

डॉ. बृज पाल
(कुलसचिव)

सम्पादक

डॉ. कृष्ण चन्द्र पाण्डे

सहसम्पादक

डॉ. अखिलेश कुमार मिश्र

डॉ. शर्मिला

डॉ. गोविन्द वल्लभ

कुलपतेः सन्देशः

भारतस्य विषये यदि वयं चिन्तयायः तर्हि सम्यक् विज्ञायते यत् भारतं विश्वस्य प्राचीनतमः देशः अस्ति । अस्याः संस्कृतिः विश्वस्य श्रेष्ठतमा संस्कृतिरस्ति । भारतीय संस्कृते आधारो वर्तते अस्या प्राचीनतमा भाषा । सा भाषा संस्कृत भाषा वर्तते ।

वयं जानीमः एव यत् कस्यापि राष्ट्रस्य परिचयः तस्य साहित्य माध्यमेन एव भवति । भारतीय समग्र ज्ञान विज्ञानस्य च आधारो वैदिक साहित्यं वर्तते सहैव भारतीय संस्कृतेःआधारोऽपि वैदिकसाहित्यमस्ति । लौकिक साहित्येऽपि रामायण महाभारत सदृशः ग्रन्थ अस्माकं सस्कृतिं पोषयन्ति । भारतीय लोक जीवन परम्परायां यत् किञ्चिदपि-दरीदृश्यते तत् सर्वं वैदिक साहित्यं रामायणं महाभारतं आधारीकृत्य एवं संचाल्यमानो विद्यते । भारतीय एकात्मतायाः आधारोऽपि संस्कृत भाषा एवं अस्ति । संस्कृत साहित्यं आराष्ट्रे पठ्यते पाठयते च । आधुनिके वैज्ञानिक युगे अपि संस्कृत भाषाया महत्त्वं अवगच्छन्ति वैज्ञानिकाः । भारतस्य पूर्व राष्ट्रपतिः स्व. डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम महोदयेन उक्तमासीत् यत् तस्य वैज्ञानिक चिन्तनदृष्ट्याम् संस्कृत भाषायाः संस्कृत ग्रन्थानाञ्च योगदानं वर्तते । वर्तमान सन्दर्भेऽपि भारतीय अनुसंधान-सङ्गठनस्य प्रमुखस्य कथनमपि संस्कृतस्य महत्त्वं प्रतिपादयति । संस्कृतं सङ्गणकस्य कृते समृद्ध भाषा अस्ति ।

अस्य महत्त्व डॉ. भीमराव अम्बेडकर संविधान सभायाःपुरतः वर्णयन् संस्कृतं भारतस्य राष्ट्र भाषा भवेत् इति प्रतिपादयति । तस्य कथनमासीत् यत् संस्कृत भाषा सम्पूर्णराष्ट्रस्य भाषाः अस्ति सर्वत्र अस्या भाषायाः सम्मानं वर्तते । अतः राष्ट्रभाषा रूपेण संस्कृत भाषा भवितव्या ।

कुलपतिः
महर्षिवाल्मीकिसंस्कृतविश्वविद्यालयः

सम्पादकीयम्

एकः प्रश्नः सदैव मनसि जायते यत् किं नैराश्येन आत्मानं वारयितुं शक्यते ? अद्य वर्तमान समये सर्वे जनाः नैराश्यपूर्ण भावेन ग्रसिताः दृश्यन्ते । अस्य सन्दर्भे एषः प्रश्नः स्वाभाविक रूपेण विद्यते यत् एतत् नैराश्यं किमर्थं उत्पद्यते। एतस्य अनेकानि कारणानि भवन्ति परं मुख्यतः अस्य कारणं धैर्यस्याभावो विद्यते । जीवनस्य सफलतायाः आधारेषु धैर्यमति महत्त्वपूर्णमस्ति । धर्मस्य दशलक्षणेष्वपि धृति सर्वप्रथममस्ति ।

यदि वयं कस्यापि कार्य सिध्यर्थं कार्यं कुर्मः चेत् यदि तस्मिन् कार्ये यदि सफलतां न लभते चेत नैराश्यं स्वाभाविकं वर्तते परं यदि वयं धर्मेण चिन्तयामः तर्हि सरलया अवगन्तुं शक्यन्ते यत् अस्माकं प्रयासे किञ्चित् न्यूनता अवश्यं भवति । यदिं इदमस्ति तर्हि पुनः प्रयासः करणीयः । गीतायां भवतः कृष्णेन उक्तं वर्तते यत् कर्मण्येवाधिकारस्ते न फलेषु कदाचन । अस्माकं अधिकारो केवलं कर्मणि वर्तते अतः अस्माभिः पुनः पुनः प्रयासः करणीयः।

अस्माभिः एतदपि विचारणीयं यत् अस्माकं स्वभावो कीदृशो वर्तते ? नियति कीदृशी अस्ति ? समयः अनुकूल अस्ति प्रतिकूलं वा समयः यदि अनुकूलमस्ति चेत् न्यूनप्रयासेऽपि सफलातां प्राप्यते । जीवने सफलतां-असफलतां अस्माकं हस्ते नास्ति। अस्माकं हस्ते केवल 'कर्म' एव अस्ति । वयं जानीमः एव यत् असफलता प्रेरणादायिनी अपि भवति । परं धैर्येण स्व कार्यं प्रति निरन्तरं प्रयासरतो भवतिव्यम् । महान् वैज्ञानिकः आइन्सटीन कथयति यत् तेन स्व जीवने सफलता प्राप्तुं नवनवतिः प्रतिशतं धैर्मेण एक प्रतिशतं च प्रेरणया सफलतां लब्धम् ।

जीवने कस्यापि कार्यस्य सफलतायाः कृते स्व जीवने धैर्यस्य विकासः आवश्यकम् । धैर्यपूर्वकं असफलतायाः विश्लेषणं तथा च पुनः निष्ठापूर्वक प्रयासः करणीयः सफलता अवश्यं प्राप्यस्यते ।

सम्पादकः

'वेद सर्वप्रतिष्ठितम्'

वेद कण्ठीय परम्परा का अद्भुत उदाहरण है, जो अत्यन्त प्राचीन होने के बाद भी यथावत् आज भी संरक्षित है। इसका मूल कारण स्वर, मात्रादि किसी भी तरह का कोई परिवर्तन न होकर विभिन्न रूपों में संरक्षित रहना जोकि प्रकृति पाठ एवं विकृति पाठ के रूप में है। मंत्रों के विभिन्न पाठ उपलब्ध होते हैं। जिसे प्रकृति पाठ एवं अष्ट विकृति पाठ के रूप में जानते हैं।

आज के इस वैज्ञानिक युग में भी वेदों की प्राचीनता एवं नित्यता पर किसी को संदेह नहीं है। मानव जाति के इतिहास संस्कृति एवं ज्ञान-विज्ञान की दृष्टि से वेदाध्ययन नितान्त आवश्यक माना जाता है।

पौराणिक परम्परा के अनुसार प्रारम्भ में वेद एक विशाल ज्ञान राशि की तरह एक ही था। लेकिन द्वापर युग के आरम्भ में यज्ञ प्रक्रिया के आधार पर महर्षि व्यास ने वेद का चतुधा विभाजन किया और हौत्रकर्म प्रतिपादक ऋग्वेद आध्यर्वयकर्म प्रतिपादक यजुर्वेद एवं औदगात्र कर्म प्रतिपाद सामवेद तथा ब्रह्मकर्म प्रतिपादक अथर्ववेद को क्रमशः अपने चार शिष्यों पैल, वैशम्यपायन, जैमिनि और समन्तु को पढाया। इससे पूर्व ब्रह्मा की परम्परा से वेद अविच्छन्न रूप से प्रवाहित हो रहे थे।

युगान्तेऽन्तर्हितान् वेदान् सेतिहासान् महर्षयः।
लेभिरे तपसापूर्वमनुज्ञानाः स्वयंभूवा॥

इसी तथ्य को महाभारत के श्लोक से भी प्रमाणित किया जा सकता है।

अनादिनिधना नित्या वागुत्सृष्टा स्वयम्भुवा।
आदौ वेदमयी दिव्या यतः सर्वाः प्रवृत्तयः॥

यजुर्वेद की ब्रह्मपरम्परा और आदित्यपरम्परा दो परम्पराएँ विद्यामान है। ब्रह्म परमपरा एवं आदित्य परम्परा, ब्रह्म सम्प्रदाय के अन्तर्गत सम्पूर्ण कृष्ण यजुर्वेद एवं आदित्य सम्प्रदाय के अन्तर्गत शुक्लयजुर्वेद आता है। जैसा कि शतपथ ब्राह्मण चौदहवें काण्ड में इस बात का स्पष्ट उल्लेख है कि वेद सूर्य की कृपा से प्राप्त शुक्लयजुर्वेद के व्याख्यान कर्ता महर्षि याज्ञवल्क्य है।

आदित्यानीमानि शुक्लानि यजूंषि
वाजसनयेन याज्ञवल्क्येन आख्यायन्ते।

ब्रह्मसम्प्रदाय के अन्तर्गत प्राप्त सम्पूर्ण कृष्णयजुर्वेद की सम्प्रति चार शाखाएँ ही उपलब्ध हैं। कृष्णयजुर्वेद की सबसे प्रमुख संहिता जिसमें 7 काण्ड, 44 प्रपाठक और 631 अनुवाक हैं। अनुवाक भी खण्डों में प्राप्त होते हैं। इस प्रकार तैत्तिरीय संहिता के सन्दर्भ निर्देश चार संख्याएं होती है।

(ख) मंत्रायणी संहिता

(ग) काठक संहिता

(घ) कपिष्ठल-कठ संहिता- जिसका पारायण मं. वा. सं. वि. वि. के मून्दडी में किया गया। जिसके प्रवर्तक कपिष्ठल ऋषि थे। जिनका उल्लेख पाणिनी अपने ग्रन्थ अष्टाध्यायी ***कपिष्ठलो गोत्रे*** के रूप में किया और दुर्गाचार ने निरुक्त की टीका में ***अहं च कपिष्ठलो वासिष्ठः*** उल्लेख किया है।

इससे यह सिद्ध होता है कि ***महर्षि कपिष्ठल वसिष्ठ गोत्रीय*** रहे होंगे। विविध प्रमाणों के आधार पर विद्वानों ने यह अनुमान लगाया है कि कुरुक्षेत्र के पास वर्तमान कैथल शहर कपिष्ठल का ही अपभ्रंश है, जो महर्षि कपिष्ठल ऋषि का निवास स्थान था। इस शाखा का सन्दर्भ ऋग्वेद की तरह अष्टकों एवं अध्यायों में उपलब्ध होता है। जैसा की इस शाखा में कुल 48 अध्याय जिनको 6 अष्टकों में बाँटा गया है।

डॉ. मदनमोहन तिवारी
सहायक आचार्य (वेद)

विश्वविद्यालय में मनाया गया गुरु पूर्णिमा पर्व

दिनांक 3 जुलाई 2023 को महर्षि-वाल्मीकि-संस्कृत-विश्वविद्यालय, कैथल के टीक परिसर में गुरु पूर्णिमा (व्यास पूर्णिमा) के अवसर पर एक दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्यातिथि प्रसिद्ध संस्कृत विद्वान् एवं विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध संस्थान के पूर्व निदेशक प्रो. जगदीश प्रसाद सेमवाल, अध्यक्ष विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रमेश चन्द्र भारद्वाज तथा संयोजक डॉ. सुरेन्द्र पाल वत्स रहे। सर्वप्रथम भगवान वेदव्यास को पुष्पञ्जलि अर्पित कर विद्यार्थियों एवं अध्यापकों द्वारा गुरु पूजन किया गया तथा वैदिक यज्ञ का आयोजित किया। जिसमें सभी वैदिक ऋषियों का आवाहन कर उन्हें आहुति प्रदान की गई। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रमेश भारद्वाज ने कहा कि गुरु एक परम-तत्त्व है, किसी व्यक्ति विशेष को माध्यम बनाकर हम उस गुरु-तत्त्व का साक्षात्कार करते हैं, और पूजते हैं। गुरु पूर्णिमा का यह पर्व हमारी वैदिक संस्कृति का प्रमुख स्तंभ है, जब तक गुरु-शिष्य परम्परा बनी रहेगी तब तक वैदिक संस्कृति भी बची रहेगी। आज व्यास पूर्णिमा भी है, यह कैथल नगरी भगवान वेदव्यास की तपस्थली रही है, उन्होंने इसी कैथल में चारों वेदों का संकलन किया और विभाजन किया। इसलिए भी यह दिन हमारे लिए महत्वपूर्ण हो जाता है। कैथल वैदिक सभ्यता का उद्गम स्थल है, यहां वैदिक संस्कृति फली-फूली और यहीं से इस संस्कृति का विस्तार भी हुआ। वैदिक काल से चली आ रही गुरु-शिष्य परम्परा को जीवित रखने का दायित्व भी हम संस्कृत के विद्वानों का ही है। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के अधिष्ठातागण, विभागाध्यक्षगण, आचार्यगण, अधिकारीगण, कर्मचारीगण एवं छात्रगण उपस्थित रहे।

विश्वविद्यालय के टीक परिसर में किया गया वृक्षारोपण

महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय, कैथल के टीक परिसर में दैनिक जागरण समाचार पत्र समूह के सहयोग से 11 जुलाई, 2023 को प्रातः 11:00 बजे वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। परिसर में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रमेश चन्द्र भारद्वाज तथा कुलसचिव डॉ. बृज पाल ने पीपल, बड़ व नीम की त्रिवेणी लगाकर वृक्षारोपण कार्यक्रम को सम्पन्न किया। इस अवसर पर कुलपति ने कहा कि त्रिवेणी में देवताओं का वास होता है और त्रिवेणी से निरन्तर सकारात्मक ऊर्जा का प्रवाह बहता है, जिससे हमारे चारों ओर का वातावरण शुद्ध होता है। हमारी वैदिक संस्कृति में त्रिवेणी का आध्यात्मिक और वैज्ञानिक महत्व है, यह पर्यावरण की रक्षा के लिए महत्वपूर्ण है। विश्वविद्यालय का नया सत्र प्रारम्भ हो रहा है, अतः त्रिवेणी लगाकर हम विश्वविद्यालय की उन्नति के लिए कामना करते हैं। दैनिक जागरण समूह का यह राष्ट्रीय अभियान **"आओ करें प्रकृति में निवेश"** आने वाली पीढ़ी के लिए पर्यावरण संरक्षण का कार्य हैं। वृक्षारोपण कार्यक्रम में दैनिक जागरण समूह से श्री पंकज अत्री उपस्थित रहे। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के समस्त अधिष्ठाता, विभागाध्यक्ष, आचार्य, अधिकारी, कर्मचारी, छात्र-छात्राएं एवं मीडियाकर्मी उपस्थित रहे।

विश्वविद्यालय में योग कार्यशाला का उद्घाटन

दिनांक 15 जुलाई 2023 को महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय, कैथल के टीक परिसर में 40 घण्टे की "सघन योग शिक्षक प्रशिक्षण कार्यशाला" का उद्घाटन समारोह आयोजित किया गया। इस कार्यशाला के माध्यम से हरियाणा की जनता को प्रशिक्षित योग के अध्यापक उपलब्ध कराना है। कार्यक्रम के अध्यक्ष विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रमेश चन्द्र भारद्वाज तथा मुख्य प्रशिक्षक के रूप में चौधरी रणवीर सिंह विश्वविद्यालय से डॉ. विरेन्द्र उपस्थित रहे। माननीय कुलपति महोदय ने कहा कि योग अभ्यास और साधना का विषय है। वैराग्य भाव से अभ्यास करके समाधि तक पहुंचा जाता है, इसलिए सघन होना आवश्यक है। हरियाणा सरकार का संकल्प है कि प्रत्येक गाँव में योग अनुदेशक होने चाहिए। इस कार्यशाला का उद्देश्य मुख्य रूप से योग में स्नातक एवं परास्नात्तक परीक्षा में उत्तीर्ण हरियाणा के युवकों को योग शिक्षा का प्रशिक्षण प्रदान करना है, जिससे योग के क्षेत्र में प्रशिक्षण का कार्य कर रहे शिक्षकों का अध्यापन कौशल विकसित हो।

सप्त-दिवसीया सघन योग शिक्षक प्रशिक्षण समापन 21 जुलाई 2023 को किया गया जिसमें 60 से अधिक छात्रों ने भाग लिया। कार्यशाला में योग के विविध आयामों को छात्रों को सिखाया गया तथा छात्रों को योग आसनों के प्रयोग द्वारा केसे रोगों से उपचार किया जा सकता है यह भी सिखाया गया। एक आदर्श योग शिक्षक कैसा हो इसके लिए आवश्यक सभी आयामों को छात्रों को सिखाया गया। इस दिन प्रातः काल में वैदिक विधि से यज्ञ का सम्पादन किया गया तथा मध्याह्न अनन्तर समापन समारोह का आरंभ विश्वविद्यालय के संकायाध्यक्ष (शैक्षणिक) प्रो. भाग सिंह बोदला ने समारोह के मुख्यातिथि कैथल के नगराधीश (CTM) श्री कपिल शर्मा का स्वागत किया। अध्यक्षीय उद्बोधन में माननीय कुलपति महोदय ने कहा कि विश्वविद्यालय के तीन विभागों कर्मकांड, ज्योतिष और योग में रोजगार की दृष्टि से अपार संभावनाएं हैं। माननीय कुलपति ने योग विभाग को Centre of Excellence के रूप में स्थापित करने की घोषणा की तथा योग विभाग की सीटें 30 से 60 कर देने की घोषणा कर दी।

मुख्यातिथि श्री कपिल शर्मा ने अपना उद्बोधन आरंभ करते हुए कहा कि योग हमारी प्राचीन विरासत है, जो कि वर्तमान और भविष्य में भी स्वस्थ भारतीयों के निर्माण का आधार है। कार्यक्रम के अन्त में मुख्यातिथि और कुलपति महोदय द्वारा छात्रों को प्रमाण पत्रों का वितरण किया गया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के अधिष्ठातागण, अधिकारीगण, प्राध्यापकगण, कर्मचारीगण, तथा छात्र उपस्थित रहे।

(बाँए)14 अगस्त को गाँव टीक में तिरंगा यात्रा के अवसर पर वि.वि. के कुलपति प्रो. रमेश चन्द्र भारद्वाज, गाँव के सरपंच, ग्रामीण एवं विद्यार्थी तथा (दाँए) 77 वें स्वाधीनता दिवस के अवसर पर ध्वजारोहण करते मा. कुलपति महोदय के साथ वि. वि. के अधिकारी, प्राध्यापक एवं समस्त कर्मचारीगण।

पतंजलि के महाभाष्य पर सात दिवसीय कार्यशाला का आयोजन

महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय, कैथल एवं भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान से विश्वविद्यालय के टीक परिसर में पतंजलि के महाभाष्य पर सात दिवसीय कार्यशाला का आयोजन दिनांक 9 से 15 अगस्त 2023 तक किया गया। जिसमें देश के प्रसिद्ध भाषा वैज्ञानिक, दार्शनिक एवं व्याकरण शास्त्र के विद्वान उपस्थित रहे। कार्यशाला के उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय से संस्कृत विभाग के पूर्व आचार्य प्रो. भीम सिंह, द्वितीय एवं तृतीय दिवस में मुख्य अतिथि विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध संस्थान के पूर्व निदेशक प्रो. जगदीश प्रसाद सेमवाल, चतुर्थ से सप्तम दिवस तक मुख्यातिथि श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय के (विभागाध्यक्ष-व्याकरण विभाग) प्रो. राम सलाही द्विवेदी जी ने व्याकरण अध्ययन के प्रयोजनों को शास्त्रीय दृष्टि व रुचिपूर्ण तरीके से विविध उदाहरणों के माध्यम से प्रस्तुत किया। कार्यशाला के अध्यक्ष विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रमेश चन्द्र भारद्वाज रहे। इस अवसर पर कार्याशाला के संयोजक, विभाग के सभी प्राध्यापक एवं छात्रगण उपस्थित रहे।

मेरा गाँव पीडल

गाँव का परिचय - मेरा गाँव पीडल हरियाणा प्रदेश के कैथल जिले की गुहला तहसील में स्थित एक बड़ा गाँव है जिसमें कुल 976 परिवार रहते हैं। 2011 की जनगणना के अनुसार, पीडल गाँव की जनसंख्या 5410 है, जिसमें 2865 पुरुष हैं, जबकि 2545 महिलाएँ हैं। पीडल गाँव में 0-6 आयु वर्ग के बच्चों की जनसंख्या 735 है, जो गाँव की कुल जनसंख्या का 13.59% है। जनगणना के अनुसार पीडल गांव का औसत लिंग अनुपात 888 है जो हरियाणा राज्य के औसत 879 से अधिक है तथा बाल लिंग अनुपात 788 है, जो हरियाणा के औसत 834 से कम है। 2011 में, के 75.55% की तुलना में पीडल गांव की साक्षरता दर 66.72% थी। पीडल में पुरुष साक्षरता दर 75.51% है जबकि महिला साक्षरता दर 57.00%। कुल अनुसूचित जाति 653 जिसमें पुरुष 338 एवं महिला 315 हैं। पीडल गांव में अनुसूचित जाति (एस.सी.) कुल आबादी का 12.07% है।

गाँव की अर्थव्यवस्था- गाँव में कुल जनसंख्या में से 1657 लोग कार्य गतिविधियों में लगे हुए थे। 82.50% श्रमिक अपने काम को मुख्य कार्य (6 महीने से अधिक रोजगार या कमाई) के रूप में वर्णित करते हैं, जबकि 17.50% 6 महीने से कम समय के लिए आजीविका प्रदान करने वाली सीमांत गतिविधि में शामिल थे। मुख्य कार्य में लगे 1657 श्रमिकों में से 522 कृषक (मालिक या सह-मालिक) थे जबकि 220 कृषि श्रमिक थे। पीडल गांव में लोग विभिन्न रोजगार करते हैं जैसे- कृषि, पॉली-हाउस, पशुपालन, मतस्य पालन व मुर्गी पालन जैसे व्यवसाय करते हैं तथा अपना रोजगार चलाते हैं। कृषि में किसान गेहुँ, चावल, गन्ना, व सब्जियां आदि उगाते हैं। गाँव से बड़ी संख्या में लोग पुलिस, बिजली, सेना, शिक्षा एवं स्वास्थ्य जैसे विभागों में सरकारी सेवाएं दे रहें हैं।

मन्दिर एवं धार्मिक स्थल- हमारे गाँव में सभी धर्मों एवं जातियों के लोग निवास करते हैं। गाँव में बाबा बालक नाथ मन्दिर, बाबा गैबी साहिब मन्दिर, प्राचीन शिव मन्दिर के साथ-साथ गुरुद्वारे और चर्च भी स्थित है। हमारे गांव में सभी त्यौहार बड़ी ही धूमधाम से मनाये जाते हैं जैसे दीपावली, दशहरा, होली, रक्षाबंधन, गुरुपर्व तथा क्रिसमिस डे इत्यादि सभी त्यौहार गांव के सभी लोग आपस में मिल-जुलकर मनाते हैं। इन धार्मिक स्थानों पर प्रत्येक त्योहारों पर मेलों का आयोजन किया जाता है। जिसमें बड़ी संख्या में श्रद्धालू दर्शन के लिए आते हैं।

शिक्षण संस्थान- हमारे गाँव सरकारी एवं निजी शिक्षण संस्थान हैं। जिसमें राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, शान्ति निकेतन पब्लिक स्कूल तथा ज्ञान गंगा पब्लिक स्कूल प्रमुख हैं। इन शिक्षण संस्थाओं में गाँव के साथ-साथ आस-पास के गाँवों से भी विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करने आते हैं।

सिचांई- गांव में सिचाईं के विभिन्न साधन हैं जैसे नहरें, छोटी नहर (रजबाहा) तालाब, एवं नलकूप आदि प्रमुख हैं। गांव में पीने का पानी के लिए सरकार द्वारा एक ट्यूवेल की व्यवस्था की गई है जिससे सारे गाँव में साफ व स्वच्छ जल की सिंचाई की जाती है।

खेल एवं खिलाडी- हमारे गाँव के अलबाद सिंह और रुलदू राम प्रसिद्ध कबड्डी खिलाड़ी रहे हैं, जिन्होंने गाँव के नाम को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर तक उज्ज्वल किया है। इनसे प्रेरित होकर गाँव के युवा गाँव के मुख्य द्वार के समीप स्थित अखाड़े में अभ्यास करते हैं जिससे आस-पास के गाँवों कबड्डी तथा कुश्ती की होने वाली प्रतियोगिताओं में भाग लेकर अपने गाँव का नाम रोशन करते हैं।

गाँव का पर्यावरण- ग्राम पंचायत एक शासकीय संस्था है जिसके मुखिया सरपंच सरकार द्वारा चलाई जाने वाली सभी योजनाओं को गाँव तक लेकर आते हैं जिसका लाभ समस्त ग्रामीण समय-समय पर उठाते रहके हैं। गांव की गलियां व सडकें पक्की हैं। पंचायत द्वारा गाँव के चारों ओर वृक्षारोपण किया गया है जिस कारण गांव का पर्यावरण तथा वातावरण साफ-सुथरा एवं स्वच्छ तथा प्रदुषण मुक्त है।

अन्य सुविधाएँ- हमारा गांव जिला कैथल से लगभग 25 कि. मी., तहसील गुहला से लगभग 8 कि. मी. तथा चीका से लगभग 7.5 कि. मी. कैथल-पटियाला मार्ग पर स्थित होने के कारण यहाँ सरकारी एवं निजी बसों की सुविधाएं मिलती है, जिससे ग्रामीणों को यातायात की असुविधाओं का सामना नहीं करना पड़ता है। हमारे गाँव में लगभग वे सभी सुविधाएँ उपलब्ध हैं जो वर्तमान में शहरों में उपलब्ध होती हैं। गाँव में पोस्ट-आफिस, सी. एस. सी. सेन्टर, पुस्तकालय इत्यादि उपलब्ध हैं। जिसका लाभ ग्रामीण समय-समय पर उठाते रहते हैं।

नेहा
(आचार्य -साहित्य द्वितीय वर्ष)

हिन्दू और हिन्दुत्व

हिन्दू शब्द लम्बे समय से भ्रान्त धारण का शिकार है। हिन्दू धर्म के सम्बन्ध में भ्रान्त धारणा का मुख्य कारण है धर्म शब्द के सही अर्थ को न समझना। धर्म शब्द का अनुवाद Religion या मजहब अर्थ में कर लिया जाता है। वास्तव में धर्म शब्द का अनुवाद हो ही नही सकता। धर्म शब्द 'धृ' धातु से बना है। जिसका अर्थ है धारण, रक्षण और पोषण। इस दृष्टि से वे सब नियम, मर्यादायें, नैतिक मानदण्ड, जीवन के आचरण और व्यवहार जिससे व्यक्ति का, परिवार का, समाज का, राष्ट्र का, विश्व का एवं सृष्टि का धारण, रक्षण एवं पोषण हो सकता है वह धर्म है। धर्म की इतनी व्यापक संकल्पना है।

महाभारत के शान्ति पर्व में धर्म को परिभाषित किया है।

धारणात् धर्ममित्याहुः, कस्मात् धारयते प्रजाः।
यत् स्यात् धारण संयुक्तः सः धर्मः इति निश्चयः॥

मनस्मृति में धर्म के दश लक्षण बताये है।

धात्, क्षमा, दमोस्तेयं शौचमिन्द्रयनिग्रहः।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्म लक्षणम्॥

कणाद् ने वैशेषिक दर्शन में पहले सूत्र में ही धर्म की परिभाषा की है।

यतोऽयुदयनिःश्रेयससिद्धि सः धर्मः।

जिससे लोक और परलोक दोनों की उन्नति हो उसे धर्म कहा जाता है। यही मानव धर्म है।

वास्तव में इस सिद्धान्त का प्रतिपादन भारतीय (हिन्दू) मनीषियों ने किया अतः इसे हिन्दू धर्म कहा जाने लगा। वास्तव में यह मानव धर्म है। इसी के आधार पर भारतीय मनीषियों ने दर्शन, आचार और व्यवहार से संबन्धित जो सिद्धान्त एवं संकल्पनाएं प्रस्तुत की हैं। वे ही कालान्तर में हिन्दुत्व नाम प्रचलित और प्रतिष्ठित हो गयी।

वास्तव में पुरातन परन्तु नित्यनूतन अर्थात् सनातन चिरंतन निरन्तर विकासमान सांस्कृतिक जीवन प्रवाह का नाम हिन्दुत्व है। हिन्दुत्व खण्डित यांत्रिक विश्वदृष्टि नहीं अपितु एकात्म विश्वदृष्टि मानता है। हिन्दुत्व के अनुसार सम्पूर्ण सृष्टि परम चैतन्य की अभिव्यक्ति है। इसलिए वह कहता है- **सियाराममय सब जग जानी, सर्वं खल्विदं ब्रह्म, ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किच जगत्यां जगत्।**

इस प्रकार सम्पूर्ण सृष्टि के प्रति एकात्म भाव, जगत के प्रति अविभाज्य दृष्टि कोण, समग्र सृष्टि अखण्ड है। यत्पिण्डे तत ब्रह्माण्डे यत् ब्रह्माण्डे तत् पिण्डे यह भाव रखने वाला हिन्दुत्व है।

हिन्दुत्व प्रकृति के प्रति मातृत्व और देवत्व का भाव रखता है। इसलिए वह धरती माता, गौ माता, तुलसी माता, पहाड़ देवता, नदी देवता, वृक्ष देवता, सर्प देवता आदि अनेक रूपों में उल्लेख करता है। हिन्दू ग्रन्थों में सूर्य, चन्द्र, अग्नि, वायु, जल आदि की स्तुति के मन्त्र उपलब्ध है। धार्मिक व तीर्थ स्थान नदी या समुद्र के किनारे या पहाड़ों पर, ब्रह्मचर्य, वानप्रस्थ व सन्यास आश्रम का सम्बन्ध वनों से है।

इसी प्रकार देवताओं के वाहन- शंकर का नन्दी, ब्रह्मा व सरस्वती का-हंस, विष्णु का गरुड, कुमारस्वामी (कार्तिकेय) का मोर, गणेश का चूहा, लक्ष्मी का उल्लू है। व्रत और त्योहारों को देखें तो प्रकृति के अटूट प्रेम को प्रकट करते हैं यथा- वट सावित्री, आँवला नवमी, पीपल, तुलसी पूजन, तुलसी विवाह आदि।

मनुष्य प्रकृति व पर्यावरण का अविभाज्य अंग है। हिन्दुत्व सर्वसमावेशी सर्वमंगलकारी चिन्तन एवं जीवन दृष्टि पर आधारित है। इसलिए हमने कहा है- **सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वभूतहितेरतः, वसुधैव कुटुम्बकम्, स्वदेशो भुवनत्रयम्** आदि सम्पूर्ण विश्व के कल्याण भाव को प्रदर्शित करते हैं।

नेहा देवी
एम. ए. (हिन्दू अध्ययन)

अन्तर्जालम् (Internet)

वयं सर्वे यन्त्रयुगे जीवामः। अनेन साकं, सर्वे अन्तर्जालयुगे जीवामः। अन्तर्जालस्य कारणं वयं बहूनि कार्याणि वार्तुं शक्यन्ते। अनेकानि कार्याणि सम्पादितानि। आङ्ग्लभाषायां यत् 'INTERNET' इति भवति, तदेव संस्कृते 'अन्तर्जालम्' इति भवति। विश्वे वयं यत्रकुत्रापि भवामः। तदापि अन्तर्जालेन कार्याणि कुर्तु शकनुमः। अन्तर्जालेन बहूनि कार्याणि सम्पद्यन्ते।

शिक्षणात् प्रारम्भ अन्तर्जालक्रीडा पर्यन्तं सर्वाणि कार्याणि कर्तुं शक्यते। बालकाः अपि अन्तर्जालक्रीडाः मनोरञ्जनम् आनन्दं च अनुभवन्ति। अन्तर्जालस्योपयोगः नूतनविषयज्ञानार्थं, शोधकार्यार्थं, अन्वेषणार्थमपि क्रियते। अद्यतनं तु सर्वे जनाः दैनन्दिनजीवने अपि अन्तर्जालस्य उपयोगं कुर्वन्ति। यदि आपणे किंमपि वस्तुनि स्वीकुर्वन्ति तदापि धनान्तरणार्थं अपि अन्तर्जालस्य उपयोगः भवति। युवकेषु सामाजिकसम्पर्कः अन्तर्जालमाध्यमेन एव भवतिः विद्यालयेषु, महाविद्यालयेषु, विश्वविद्यालयेषु कार्यालय कार्याणि अपि अन्तर्जालमाध्यमेन एव भवति। सम्प्रति काले अन्तर्जालं विना जीवनस्य प्रगतिः न सम्भवति। अन्तर्जालस्य-अत्योपयोगेन हानिः अपि भवतिः। अन्तर्जालं तु मात्रम् एवां साधनम् अस्ति। तर्हि तस्य उपयोगः कथं करणीयम् इति अस्माकमेव दायित्वम्। एतदर्थम् अन्तर्जालस्योपयोगः न्युनमेव भवेत्

रजनी
(एम. ए. हिन्दू अध्ययन)

प्रश्नमञ्जरी

(१) कच ने शुक्राचार्य से कौन सी विद्या सीखी ?
(क) भूमि विद्या (ख) परा विद्या (ग) संजीवनी विद्या (घ) अपरा विद्या।
(२) राशिचक्र में नक्षत्र हैं-
(क) 27 (ख) 56 (ग) 28 (घ) 12
(३) श्रीमद्भगवत् गीता में श्लोक हैं-
(क) 900 (ख) 700 (ग) 1100 (घ) 10000।
(४) श्री कृष्ण का रूक्मिणी से विवाह किस विधि से हुआ -
(क) ब्रह्म (ख) राक्षस (ग) प्राजापर्य (घ) गांधर्व
(४) सूर्य एक नक्षत्र से दूसरे नक्षत्र में कितने दिनों में प्रवेश करता है ?
(क) 30 (ख) 10 (ग) 13 (घ) 27
(६) पुरुषार्थ हैं-
(क) 04 (ख) 09 (ग) 13 (घ) 07
(७) जैन पुराणों में सबसे प्रसिद्ध पुराण हैं-
(क) हरिवंश पुराण (ख) उत्तर पुराण (ग) आदि पुराण (घ) पक्ष पुराण
(८) आदिपुराण के रचयिता हैं-
(क) गुण भद्र (ख) जिनसेन (ग) रविषेण (घ) पुष्पदन्त
(९) रेखागणित के सिद्धान्तों का प्रयोग है -
(क) शुल्व सूत्रों में (ख) कामसूत्रों में (ग) न्यायसूत्रों में (घ) धर्मसूत्रों में
(१०) वैदिक गणित के लेखक हैं -
(क) माधवाचार्य (ख) भास्कराचार्य
(ग) स्वामी वासुदेवानन्द (घ) स्वामी भारती कृष्णतीर्थ

(उत्तराणि अग्रिमे अङ्के)

(चतुरङ्गशङ्कस्य उत्तराणि)

(1) यास्क (2) जयदेव (3) रमाकान्त शुक्ल (4) श्रीराम वेलणकर
(5) डॉ. बलभद्र गोस्वामी (6) श्रीधर भास्कर वर्णेकर (7) अलंकार सर्वस्य
(8) भामती (9) लीलावती (10) ऋषभदेव

श्लोकाः

मनसा चिन्तितं कार्यं वाचा नैव प्रकाशयेत्।
मन्त्रेण रक्षेत् गूढं कार्ये चापि नियोजयेत्॥

मन से सोचे हुए कार्य को वाणी द्वारा प्रकट नहीं करना चाहिए, परन्तु मननपूर्वक भली-भांति सोचते हुए, उसकी रक्षा करनी चाहिए और चुप रहते हुए सोची बात को कार्यरूप में बदलना चाहिए।

यथा चतुर्भिः कनकं परीक्ष्यते निघर्षणच्छेदनतापताडनैः।
तथा चतुर्भिः पुरुषः परीक्ष्यते त्यागेन शीलेन गुणेन कर्मणा॥

जिस तरह सोने की परख घिसने से, तोड़ने से, गरम करने से और पीटने से होती है। वैसे ही मनुष्य की परख विद्या, शील, गुण और कर्म से होती है।

विक्लवो वीर्यहीनो यस्य दैवमनुवर्तते।
वीरास्सम्भावितात्मानो न दैवं पर्युपासते॥

जो कायर होते हैं वे केवल भाग्य पर निर्भर रहते है। स्वाभिमानी तथा शूरवीर भाग्य की परवाह नहीं करते।

वनानि दहतो वह्नेः सखा भवति मारुतः।
स एव दीपनाशाय कृशे कस्यास्ति सौहृदम्॥

जब जंगल में आग लग जाती है तो हवा उसकी मित्र बन जाती है और आग फैलाने में मदद करने लगता है। लेकिन वही वायु एक छोटी-सी चिंगारी या लपट को पलक झपकते ही बुझा देती है। इसलिए कमजोर व्यक्ति का कोई मित्र नहीं होता।

अन्जु देवी
(एम.ए. –हिन्दू अध्ययन द्वितीय वर्ष)

चन्द्रयान-3 चन्द्रमसि सफलतया अवतीर्णाय सर्व देशवासिनां कृते हार्दिक्यः शुभाशयाः

विज्ञानानां सिद्धान्तानां उत्पत्ति वेदेभ्यः सन्ति। भारतीय-अन्तरिक्ष-अनुसन्धान-सङ्गठनस्य प्रमुखस्य कथनस्ति यत् अलजेब्रातः एविएशन पर्यन्त सर्वं वेदात् एव प्राप्ताः। उपरान्त एव अरब देशैः द्वारा सर्वं ज्ञानं यूरोप पर्यन्तं गतम्। अनन्तरं यूरोपिय वैज्ञानिकाः वदन्ति यत् एतत् तु विज्ञानस्य शोधेन प्राप्तमस्ति। एस सोमनाथानुसारम् अलजेब्रा, स्क्वार, रूट्स समयस्य परा कॉन्सेप्टस आर्किटेक्चर, यूनिवर्सस्य स्ट्राक्चर सदृशं कानिचन वस्तुनि वेदात् प्राप्ताः सन्ति।

संस्कतं सङ्गकस्य कृते समृद्ध भाषा अस्ति

इन्जीनियरवैज्ञानिकेभ्यः अतिव रोचते संस्कृतम्, संस्कतं सङ्गकस्य कृते समृद्ध भाषा अस्ति एवं आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस जनाः संस्कृतं शिक्षिष्यन्ति। गणनायाः कृते संस्कृतस्य प्रयोगः कथं कर्तुं शक्नुमः अस्य उपरि शोध कार्यमपि चलति। अन्तरिक्ष-विभागस्य सचिव एवं अन्तरक्ष-आयोगस्य अध्यक्षः सोमनाथेन संस्कृतस्य अन्यान् लाभान् अपि उक्तम्।